Date - 20 - 05 - 2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640
Class - B.A.I (Hons)

Topic — Relation between Brahma and Jiva.

Scanned with CamScanner

ब्रह्म-जीव संबंध

ईश्वर (ब्रह्म) और जीव में अपृथक्सिद्धि सम्बन्ध है। ईश्वर का चित् और अचित् के साथ जो संबंध है, वह अपृथक्सिद्धि संबंध कहलाता है। यह सम्बन्ध एवं वास्तविक है। यहाँ अपृथक्सिद्धि का अर्थ है कि न तो जीव ईश्वर से पृथक रह सकता है और न ईश्वर जीव से पृथक होकर रह सकता है।

अपृथक्सिद्धि सम्बन्ध संयोग एवं समवाय से भिन्न है।

संयोग - दो स्वतंत्र वस्तुओं का सम्बन्ध है। इसमें सम्बन्धित वस्तुएँ एक दूसरे के बिना भी रह सकती है। जैसे - मेज एवं उस पर रखी पुस्तक के में संयोग सम्बन्ध है। समवाय दो वस्तुओं का अयुतसिद्ध सम्बन्ध है। जिसमें एक वस्तु दूसरी पर आश्रित होती है। परन्तु दूसरी वस्तु पहले पर नहीं। इन्हें प्रथक करने पर एक का विनाश हो जाता है।

रामानुज इन दोनों से भिन्न ब्रह्म और जीव में अपृथक्सिद्धि सम्बन्ध को मानते हैं जिसमें सम्बन्धित वस्तुएँ परस्पर आश्रित होती है। अतः सम्बन्ध अपृथक होता है। ईश्वर और जीव में विशेष्य - विशेषण, द्रव्य - गुण, नियन्ता - नियाम्य, आत्मा - शरीर, प्रकार - प्रकारी का सम्बन्ध है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि जीव और देह का संबंध अपृथक्सिद्धि नहीं है। जीव देह से पृथक रह सकता है, चित् अचित् से पृथक रह सकता है। चित् का अचित् से संबंध ईश्वर की इच्छा तथा कर्म के कारण है।

Scanned with CamScanner